डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के 22वें दीक्षांत समारोह में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक 10 मार्च 2024, रविवार	**समय : 10.00 AM**	**स्थान : डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय**

- डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सम्माननीय कुलपति प्रोफेसर जितेन हजारिका जी,
- बिरला विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी संस्थान (बिट्स) पिलानी, राजस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुधीर कुमार बरई जी,
- उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथिगण
- डी.एससी. और डी.लिट, मानद उपाधि से सम्मानित होने वाले प्रतिष्ठित महानुभाव
- सम्माननीय संकायगण और विश्वविद्यालय के कर्मचारीगण
- अभिभावकगण, स्नातक छात्र-छात्राओं, पूर्व छात्र-छात्राओं,
- देवियो और सज्जनो!

नमस्कार !

आज डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के बाईसवें दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर मैं सभी स्नातक विद्यार्थियों और पदक विजेताओं को बधाई देता हूँ।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय हमारे पूर्वोत्तर क्षेत्र के दूसरे सबसे पुराने विश्वविद्यालय के रूप में एक विशेष पहचान रखता है। इस विश्वविद्यालय ने 1965 में अपनी स्थापना के बाद से ही ज्ञान साझा करने और अत्याधुनिक शोध को समर्पित प्रभावशाली यात्रा को मूर्तरूप दिया है। पूर्वोत्तर भारत के इस शिक्षण संस्थान ने उच्च शिक्षा के विभिन्न विषयों में अभूतपूर्व अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त किया है। गत वर्षों से डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय ने अपने प्रयास और परिणाम से एक अमिट छाप छोड़ी है।

पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध जनजातीय-सांस्कृतिक विविधता से ओतप्रोत क्षेत्र में स्थित डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं है; बल्कि यह एक ऐसा केन्द्र है, जो ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ अद्वितीय समृद्ध पारंपरिक और स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संस्थान अपने सद्प्रयासों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक जीवंत केन्द्र बना हुआ है।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अपनाकर सुखद भविष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है।

विश्वविद्यालय ने अपने सम्बद्ध कॉलेजों में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम शुरू किया है, और इसी वर्ष से पांच वर्षीय एकीकृत स्नातक कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अपेक्षाओं के अनुरूप परिसर में पांच वर्षीय एकीकृत स्नातक कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थियों को प्रमुख, लघु, बहु-विषयक, अंतरविषयक, कौशल-आधारित और मूल्यवर्धित पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने जा रहा है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत की समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत के लिए हमारे विद्यार्थियों में गर्व और सांस्कृतिक सुदृढ़ता की भावना जाग्रत करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण का सार तत्व यह है कि हमारे युवा विद्यार्थी भारतीय परम्पराओं में निष्ठा रखते हुए 21वीं सदी के विश्व में अपना समुचित स्थान बनाएं। हमारे यहां सदाचार, धर्माचरण, परोपकार तथा सर्व-मंगल जैसे जीवन-मूल्यों पर आधारित प्रगति में ही शिक्षा की सार्थकता मानी गई है। मेरा मानना है कि जो व्यक्ति सदैव दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं उनके लिए संसार में कुछ भी प्राप्त करना कठिन नहीं है।

देवियो और सज्जनो,

हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय को पिछले साल जी-20 यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम में भाग लेने के लिए देशभर के 76 उच्च शिक्षा संस्थानों के एक प्रतिष्ठित समूह में चुना गया था। इस कार्यक्रम का आदर्श वाक्य, **"एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य", हमारे 'वसुधैव कुटुंबकम'** के भारतीय मूल्यों के साथ गहराई से मेल खाता है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अपने अंतिम मिशन के रूप में निर्धारित किया है।

महत्वपूर्ण बात यह भी है कि डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के □ांचे पर भारत की शिक्षा प्रणाली को पुनर्संयोजित करने के उद्देश्य से भारतीय ज्ञान प्रणाली केन्द्र की स्थापना की है। यह ज्ञान की स्वदेशी प्रणालियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि ऐसा मिशन केवल वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत के अन्तर्गत हमारी स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को अन्य प्रणालियों के साथ उपयोगी और एकीकृत करने से ही सफल होगा।

अब समय आ गया है कि कौशल-आधारित शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। युवाओं के बीच उद्यमिता की भावना को बढ़ावा दिया जाए, जिससे वे दूसरों को अपने अधीन काम करने का अवसर प्रदान करने में सक्षम हो सकें। इस प्रकार रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा हो सकेंगे।

प्रिय विद्यार्थियो,

किसी भी राज्य के लिए रोजगार सृजन सुनिश्चित करने की भी एक सीमा होती है। आप जैसे उद्यमशील, आत्मविश्वासी और कुशल युवाओं को उद्यमी के रूप में आगे आना चाहिए जिससे दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा हो सके।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के बीच कौशल-आधारित शिक्षा विकसित करने को प्राथमिकता दे रहा है। हमारे लिए यह भी संतोष की बात है कि विश्वविद्यालय के भीतर कई छात्र स्टार्टअप चला रहे हैं, और ये देश के विभिन्न हिस्सों और यहां तक कि बाहर के ग्राहकों को भी आकर्षित करने में सफल रहे हैं। इन छात्रों को कभी भी कहीं और नौकरी की तलाश नहीं करनी पड़ेगी; बल्कि वे दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं।

हमारे लिए यह भी बड़े गर्व की बात है कि कुछ दिन पहले ही डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय को पीएम-उषा योजना के अन्तर्गत 100 करोड़ एमईआरयू अनुदान (Multidisciplinary Education and Research University Grant) प्राप्त करने के लिए 26 विश्वविद्यालयों में से चुना गया था।

मुझे पूरा विश्वास है कि विश्वविद्यालय बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए इस अनुदान का श्रेष्ठ उपयोग करने के लिए सभी संभव उपाय करेगा।

देवियो और सज्जनो,

शिक्षा तक पहुंच केवल एक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक मौलिक अधिकार है, जो रोजगार के अवसरों के द्वार खोलता है और सामाजिक तथा आर्थिक गतिशीलता का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारे दूरदर्शी संविधान निर्माता डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का मत था कि समाज के निचले वर्गों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का समाधान भोजन और कपड़े जैसी बुनियादी जरूरतों तक सीमित नहीं रहा।

आवश्यकता इस बात की है कि उनमें गहरी जड़ें जमा चुकी हीनभावना को खत्म किया जाये जो उनके विकास में बाधा डालती है और दासता की व्यवस्था को कायम रखती है।

डॉ. अम्बेडकर का यह कथन कि **"मन का विकास मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।"** उनके इस दृढ़ विश्वास को रेखांकित करता है कि शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति के लिए एक प्रमुख प्रेरक है।

आज हमारे समाज में व्याप्त व्यापक लैंगिक भेदभाव को देखते हुए उच्च शिक्षा में लड़कियों का सक्रिय समावेश एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय भेदभावपूर्ण प्रथाओं से मुक्त एक प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ा है, जहां 60% से अधिक छात्राएं हैं। हालांकि, लैंगिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई यहीं खत्म नहीं होती है। लैंगिक संवेदनशीलता पर जोर देना और सभी शैक्षिक स्तरों पर यौन उत्पीड़न के बारे में जागरूकता बढ़ाना बहुत आवश्यक है।

उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सक्रिय रूप से लैंगिक समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए अधिक प्रासंगिक और वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप प्रयास करना चाहिए।

हमारा ध्यान पर्यावरण संकट के एक गंभीर मुद्दे की ओर भी जाता है। उच्च शिक्षा संस्थाओं को पर्यावरण सुरक्षा का समर्थन करते हुए पथ प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू के लिए पर्यावरण पर हमारी निर्भरता को पहचानते हुए, छात्रों में पर्यावरण के प्रति गहरा सम्मान पैदा करना महत्वपूर्ण है। हमें प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर इस लोकाचार को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

प्रिय विद्यार्थियो,

आप एक ऐसे समय में व्यावहारिक दुनिया में कदम रख रहे हैं जब हमारे देश को जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाते हुए वैश्विक स्तर पर नयी पहचान मिल रही है।

आपने यहां जो ज्ञान और सामाजिक कौशल हासिल किए हैं, उनका उपयोग कम सुविधा-सम्पन्न लोगों के जीवन में सुधार लाने के लिए किया जाना चाहिए। आजीविका अर्जित करना निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है लेकिन साथ में ऐसे कार्य भी ज़रूर करें जिनसे दूसरों के जीवन को बेहतर बनाया जा सके।

हमें प्रकृति के साथ उन संबंधों को बढ़ावा देना चाहिए, जो पाठ्य पुस्तकों से परे हो। आज हरित क्रांति और कागज रहित कार्य संस्कृति को अपनाना इस प्रतिबद्धता का अहम हिस्सा है। इसके लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रयोग अपरिहार्य हो गया है।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय ने माननीय प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया मिशन के साथ तालमेल बिठाते हुए, ऑनलाइन प्रवेश, शुल्क जमा करना, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट जैसे अनेक उपाय किये हैं, जिससे विश्वविद्यालय की कार्य पद्धति को निर्बाध लेनदेन के लिए सुगम तथा पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए अनुकूल बनाया जा सके।

आप सब सौभाग्यशाली हैं कि आपको नई सोच और ऊर्जा से युक्त इस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। विश्वविद्यालय समुदाय से वैश्विक समस्याओं के अध्ययन और उनके समाधान की अपेक्षा की जाती है।

जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरणीय क्षरण जैसे गंभीर विषयों पर विचार विमर्श करना एवं पारंपरिक ज्ञान और नवीनतम प्रौद्योगिकी, नवाचार और अनुसन्धान के माध्यम से ऐसी समस्याओं का समाधान निकालना आप सबका कर्त्तव्य है। इस कर्तव्य के निर्वहन के लिए आप सभी में पर्याप्त योग्यता और क्षमता विद्यमान है।

मित्रो,

भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है और अपने पूर्ववर्ती औपनिवेशिक शासक ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। वर्ष 2030 तक हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने वाले हैं।

आप सभी को ज्ञात है कि हमने भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा है। ऐसे में आपके पास एक स्वर्णिम भविष्य के निर्माण की न केवल अपार संभावनाएं हैं, बल्कि उनके अनुकूल परिस्थितियाँ भी हैं।

स्वदेशी संस्कृति का सम्मान करना और स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देना एक और महत्वपूर्ण पहलू है जिसे विश्वविद्यालयों को प्राथमिकता देनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वदेशी और यहां तक कि विदेशी भाषाओं सहित सभी की प्रथम भाषा (मातृ भाषा) के महत्व को रेखांकित करती है। बोडो, मिसिंग, देउरी और कोरियाई भाषाओं में पाठ्यक्रम पेश करने का डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय का निर्णय सराहनीय है। पूर्वोत्तर भारत में जहां प्रत्येक समुदाय अपनी मातृभाषाओं, पहचान और संस्कृति की निरंतरता और अस्तित्व को महत्व देता है।

मैं अपने विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि वे सामाजिक सशक्तिकरण के रूप में अपनी भूमिका को पहचाने और स्थानीय भाषाओं को सीखने में गर्व महसूस करें।

प्रिय विद्यार्थियों,

मैं आप सब से यह कहना चाहूंगा कि आप अपनी प्रतिभा और रुचियों के अनुसार अपना कैरियर बनाने के लिए आगे बढ़ें। हमेशा कुछ नया सीखते रहें और जो भी करें पूरी लगन, समर्पण और ईमानदारी से करें। अपने कैरियर निर्माण के साथ-साथ आपका यह भी नैतिक कर्तव्य है कि आप समाज, राज्य एवं राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

आप आज प्रतिज्ञा लें कि आप जिस क्षेत्र में कार्यरत होंगे उसमें एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए कार्य करेंगे जहां समरसता हो, जहां प्रत्येक व्यक्ति का जीवन गरिमापूर्ण हो। आपको हमेशा यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि आपके कार्य से पिछड़े या वंचित वर्ग के व्यक्ति लाभान्वित हो।

आप सब एक चुनौतीपूर्ण और प्रतिस्पर्धा की दुनिया में प्रवेश करने जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय ने आपको हर चुनौती का सामना करते हुए देश की सेवा करने के लिए सबल और सक्षम बनाया है।

आप अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करें और राज्य और राष्ट को विकास के पथ पर आगे लेकर जाने का संकल्प लें। आप सब अपनी शिक्षा और अर्जित ज्ञान के बल पर जीवन में खूब उन्नति करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

अमृत काल का यह समय सक्रियता और प्रगतिशीलता का है। देश प्रगति की राह पर आगे बढ़ रहा है। जब कभी भी संकट की घड़ी आए तो उसका समाधान निकालने के बारे में सोचें, उस चुनौती को एक अवसर की तरह देखें, यह आपकी प्रतिभा को बढ़ाएगा और आपके व्यक्तित्व को और अधिक उभारेगा।

मैं यहां महान कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करना चाहूँगा जो हमें प्रत्येक परिस्थिति में आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं -

नहीं विघ्न-बाधाओं को हम, स्वयं बुलाने जाते हैं,
फिर भी यदि वे आ जायें तो, कभी नहीं घबराते हैं।
मेरे मत में तो विपदाएँ, हैं प्राकृतिक परीक्षाएँ,
उनसे वही डरें, कच्ची हों, जिनकी शिक्षा-दीक्षाएँ॥

मैं सभी विद्यार्थियों और इस विश्वविद्यालय से जुड़े सभी पदाधिकारियों को बधाई देता हूँ। आपके स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी अनेकानेक शुभकामनाएं! आप सबको एक विकसित राज्य और राष्ट्र के निर्माण में दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता के साथ अपना अमूल्य योगदान देना है।

अंत में, मैं एक बार पुनः उपाधियां प्राप्त करने वाले सभी स्नातक विद्यार्थियों और पदक विजेताओं को बधाई देता हूँ और उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ। मैं डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, सभी सदस्यों और कर्मचारियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। इन्हीं विचारों के साथ मैं आधिकारिक तौर पर डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के 22वें दीक्षांत समारोह के उद्घाटन की घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!